छठा अध्याय

उपसंहार

उपसंहार

रचनाकार को साहित्य-सृजन की प्रेरणा उसके परिवेश के अनुभव, अध्ययन, चिन्तन, मनन और किसी घटना विशेष से मिलती है । यदि साहित्यकार अपने परिवेश के प्रति जागरूक है तो उसकी दृष्टि व्यापक होगी और उसकी रचना की परिधि भी । कहानीकार को यथार्थ की भूमि पर अपने परिवेश के अनेक स्तरों पर परिव्याप्त सही कारणों की खोज तथा व्यक्ति-व्यक्ति के परस्पर सम्बन्धों का निरूपण करना पड़ता है । किसी भी कहानी की विशेषता-श्रेष्ठता हमारे परिवेश का यथार्थ चित्रण करने के साथ-साथ उसके अनुकूल व्यक्ति को नयी चेतना प्रदान करने में है ।

जयशंकर प्रसाद अपनी कहानियों में युग और समाज को साथ लेकर चले हैं । उनकी कई कहानियों में समाज में फैली विसंगतियों का चित्रण भी मिलता है । जयशंकर प्रसाद हिन्दी के युग प्रवर्तक कवि और नाटककार के रूप में प्रसिद्ध हैं, परन्तु हिन्दी कहानी को भी उनकी देन कम नहीं है । प्रसाद की कहानियाँ जिस कालखंड में रची गई है, वह समय हिन्दी कहानी के विकास की दृष्टि से असाधारण महत्व का काल है । इसलिए प्रसाद की कहानियाँ अपने ढंग से अद्वितीय हैं।

प्रेमचन्द की कहानियों का प्रकाशन हिन्दी के कथा-साहित्य में बहुत ही महत्वपूर्ण घटना है । प्रेमचन्द की आरम्भिक कहानियों में आदर्शोन्मुख यथार्थवाद के प्रति आग्रह दिखाई पड़ता है, परन्तु उनकी बाद की कहानियाँ शुद्ध यथार्थवाद की कहानियाँ है । उन्होंने मनुष्य जीवन की यथार्थ जटिलताओं के भीतर से निकली उसकी यथार्थ समस्याओं को स्पर्श किया है । इसलिए यह सर्वविदित है कि प्रेमचंद ने ही साहित्य को जीवन के निकट लाने का प्रयास किया है । सामाजिक विषमता और आर्थिक शोषण के प्रति उनकी कहानियों में जबरदस्त आक्रोश व्यक्त हुआ है । वस्तुत: प्रेमचंद ने ही सामाजिक मानव की सामान्य और विशिष्ट परिस्थितियों, मनोवृत्तियों और समस्याओं का अंकन कर हिन्दी कहानी को एक निश्चित यथार्थवादी दिशा प्रदान की है ।

केवल तीन कहानियों के माध्यम से हिन्दी कहानी साहित्य में प्रसिद्धि के शिखर तक पहुँचने वाले चन्द्रधर शर्मा गुलेरी की प्रसिद्ध कहानी है 'उसने कहा था' । यह प्रथम विश्वयुद्ध की पृष्ठभूमि पर लिखी गई कहानी है । इसे हिन्दी की सर्वोत्कृष्ट कहानियों में से एक माना जा सकता है जिससे हिन्दी में कहानी का स्वतन्त्र विकास संभव हो सका है ।

मनोविश्लेषणात्मक कहानी रचनाकारों में जैनेन्द्र का नाम सर्वोपरि है । जैनेन्द्र ने सामान्य मानव की सामान्य परिस्थितियों को न लेकर असामान्य मानव की असामान्य परिस्थितियों से प्रभावित मानसिक प्रक्रियाओं का विश्लेषण अपनी कहानियों में किया है । उनकी कहानियाँ सामाजिक यथार्थकी कहानियाँ न होकर व्यक्ति मन के यथार्थ की कहानियाँ हैं । अज्ञेय, इलाचन्द्र जोशी, भगवंतीचरण वर्मा आदि कहानीकार मनोवैज्ञानिक कथा-लेखन के साथ अपरिहार्य रूप से जुड़े हुए हैं ।

समाजवादी कहानीकारों की परम्परा में यशपाल अग्रणी है । उन्होंने मध्यवर्गीय समाज के यथार्थ से अपनी कहानियों का संसार सृजन किया है । यशपाल के अतिरिक्त उपेन्द्रनाथ अश्क, रांगेय राघव, अमृतराय, चन्द्रगुप्त विद्यालंकार, विष्णुप्रभाकर जैसे प्रमुख समाजवादी कहानीकार है जिन्होंने सामाजिक यथार्थ को मानसिक उलझनों और गहरे अन्तर्द्वन्द्व से जोड़कर अत्यधिक मार्मिक ढंग से चित्रित किया है ।

हिन्दी की नयी कहानी में एक ओर तो व्यक्ति की विवशता और उसके तज्जन्य क्षोभ का वर्णन हुआ है तो दूसरी ओर भ्रष्ट संस्कारों, अगतिशील जीवन मूल्यों का, सामाजिक भ्रष्टाचार और शोषण के विरुद्ध नये जीवन मूल्यों की स्थापना की गई है । इसकी एक खूबी यह है कि इसमें समसामयिक विषयों का अवलोकन हुआ है । नये कहानीकार कहानी रचता नहीं है, प्रत्युत अपने अनुभव को कहानी के रूप में बदल देता है । इसमें जीवन की जटिलताओं, विड़म्बनाओं, अन्तर्विरोधों, विसंगतियों का चित्रण अत्यन्त यथार्थता के साथ हुआ है । नयी कहानी की चेतना परिवेश से जुड़े हुए व्यक्ति मन की चेतना है । वह जीवन के दबाव में बनते-बिगड़ते मानवीय मूल्यों, मानवीय रिश्तों और उनकी संवेदनाओं की ही अभिव्यक्ति करती है ।

नयी कहानी में पारिवारिक और सामाजिक स्तर पर आये सम्बन्धों तथा स्त्री-पुरुष सम्बन्धों में आये बदलाव का चित्रण हुआ है । राजेन्द्र यादव, मोहन राकेश, कमलेश्वर, भीष्म साहनी, मन्नूभंड़ारी, उषा प्रियंवदा आदि कहानीकारों की कहानियाँ इसका स्पष्ट उदाहरण हैं । समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार, पाखण्ड, राजनीतिक अस्थिरता, अराजकता, असंतुलन, सामाजिक अव्यवस्था, असंतोष, निराशा आदि का खुलकर वर्णन नयी कहानी में हुआ है ।

नयी कहानी शिल्प और भाषा के स्तर पर बहुत संपन्न और समृद्ध हुई है । संकेत, प्रतीक एवं बिम्बों का प्रयोग भी हुआ है । नयी कहानी में यथार्थ की भाषा का प्रयोग हुआ है, जिससे उसमें जिन्दगी का स्पन्दन पूरी तरह से विश्वसनीयता और प्रामाणिकता के साथ चित्रित हो सका है । नयी कहानी में भाषा को एक नया संस्कार दिया गया है तथा उसे परम्परागत आभिजात्य से मुक्त किया गया है ।

नये कहानीकारों ने अलग-अलग ढंग से आज की जिन्दगी की संकट स्थितियों को जिया है और अनुभव किया है । इन कहानीकारों ने अपने-अपने अनुभव के मुताबिक, अपने परिवेश में एक-दूसरे से भिन्न अपनी-अपनी प्रतिक्रियाओं को व्यक्त किया है । मोहन राकेश, कमलेश्वर, राजेन्द्र यादव, निर्मल वर्मा, फणीश्वरनाथ रेणु, अमरकान्त, भीष्म साहनी, मन्नू भंड़ारी, उषा प्रियंवदा आदि नयी कहानी के प्रमुख हस्ताक्षर माने जाते हैं ।

निष्कर्षत: नयी कहानी में कहानीकारों ने आज़ादी के पश्चात् राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक और पारिवारिक दृष्टि में आए परिवर्तनों को गहराई के साथ उकेरा है । साथ ही जीवन के हर एक पक्ष को प्रस्तुत करने का श्रेय भी इन्हें मिला है । वस्तुत: नयी कहानी हिन्दी कहानी साहित्य की महत्वपूर्ण उपलब्धि है ।

नयी कहानी क्षेत्र में गजानन माधव मुक्तिबोध की अपनी एक अलग पहचान है । प्रयोगशील नयी कविता के प्रतिनिधि कवि के रूप में प्रतिष्ठित मुक्तिबोध ने कुछ महत्वपूर्ण कहानियों की रचना भी की हैं ।

मुक्तिबोध अपने अनुभवों को सामाजिक सन्दर्भ में रखकर ही जाँचते-परखते हैं । उनकी रचनाओं के कथ्य में रचा गया वातावरण उनका देखा हुआ, अनुभव किया हुआ संसार है । सामयिक घटनाओं पर उन्होंने विशेष ध्यान नहीं दिया लेकिन रोजमर्रा के संसार में पिसते हुए आदमी की त्रासदी को उनकी रचनाओं में देखा जा सकता है । मुक्तिबोध सुविधावादी व्यक्ति नहीं थे, इसीलिए वे जीवन भर अनुभूति की सच्चाई को व्यक्त करते रहे । वे आज के मानव जीवन में व्याप्त भय, आतंक, अनिश्चय, चिन्ता, असन्तोष, तनाव आदि को महसूस करते रहे, किन्तु इन सबके होते हुए भी उन्होंने दायित्व भाव को कभी नहीं छोड़ा । उन्होंने वर्तमान जीवन की यांत्रिक सभ्यता से समझौता नहीं किया । मुक्तिबोध ने कभी भी अयथार्थ को स्वीकार नहीं किया और न कभी अपने अनुभवों की कड़वाहट को सौन्दर्यमयी बनाने के लिए असत्य का सहारा लिया । उन्होंने जीवन में यही सीखा कि सत्य किसी एक की जागीर नहीं ।

मुक्तिबोध का 'तारसप्तक' में दृष्टिगत वैचारिक जड़त्व पूर्णरूप से निकल चुका था और काव्य - व्यक्तित्व कथाकार, साहित्यिक चिन्तक, निबन्धकार, कवि और समीक्षक की दृष्टि से सुदृढ़ हो चुका था ।

भौतिक जगत का आर्थिक एवं सामाजिक संघर्ष तथा एक संवेदनशील कलाकार का आन्तरिक संघर्ष इन दोनों का आपसी सामंजस्य स्थापित करने के लिए मुक्तिबोध को जो जीवन-दृष्टि अपने अध्ययन काल में प्राप्त हुई, वह बाद में चल कर उनके समस्त काव्य चिन्तन का मूल केन्द्र बनी । इस जीवन दृष्टि को पूर्णता प्राप्त करने का संघर्ष ही चिन्तन के क्षेत्र में उनका आत्मसंघर्ष है । 'नयी कविता का आत्मसंघर्ष तथा अन्य निबन्ध' मुक्तिबोध के चिन्तन का स्पष्ट और सबल प्रमाण है । इस चिन्तन के माध्यम से मुक्तिबोध उस 'नयी कविता' को प्रस्थापित करना चाहते थे जो रचनाकार की तत्वसंघर्ष, अभिव्यक्ति संघर्ष एवं दृष्टि संघर्ष की निष्कर्षित प्रतिक्रिया हो । काव्य की रचना प्रक्रिया में इन्हीं तीन मन:स्थितियों की अभिव्यक्ति है ।

'नये साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र' निबन्ध संग्रह को मुक्तिबोध के सुपुत्र रमेश मुक्तिबोध ने प्रकाशित कराया है । इसमें मुक्तिबोध ने निबन्ध की रचना-प्रक्रिया, उपलब्ध जीवन-दृष्टि, जीवन-मूल्य, समाज, साहित्य आदि उत्कट प्रश्नों पर गंभीरतरपूर्वक विचार किया है ।

'एक साहित्यिक की डायरी' में युगीन संक्रमणशील मूल्यों के बीच सृजन की समस्या पर कहने की पहल मुक्तिबोध ने की है। इसमें एक साहित्यकार की संवेदनशीलता और बौद्धिकता का पूर्ण परिचय मिलता है । एक साहित्यिक की हैसियत से मुक्तिबोध ने इनमें अपने विचारोन्मुख भावों को जन-जीवन के सामान्य परिवेश में प्रतिक्रिया-स्वरूप हल्के-फुल्के ढंग से अभिव्यक्त किया है ।

'कामायनी : एक पुनर्विचार' आलोचना ग्रन्थ है जो समाजवादी दृष्टि से लिखा गया है । 'कामायनी' के विषय में विद्वानों की विभिन्न धारणाएँ रही है, किन्तु मुक्तिबोध ने इन सब से अलग होकर कामायनी को जीवन और जगत् से संबद्ध किया और इसे सामाजिक, राजनैतिक एवं आर्थिक हलचलों से मिलाकर देखा है ।

निष्कर्ष रूप में यह कहा जा सकता है कि मुक्तिबोध का निबन्धकार का व्यक्तित्व भी अपनी जीवन दृष्टि के अभिव्यक्तिकरण की प्रक्रिया में कवि व्यक्तित्व के समानान्तर तीव्र रूप से सक्रिय रहा ।

काव्य-सृजन के साथ-ही-साथ मुक्तिबोध ने कहानी-विधा को भी अपनी अभिव्यक्ति के रूप में अपनाया है । 'तारसप्तक' के अपने 'वक्तव्य' में उन्होंने कहा है - "…. साथ ही जिज्ञासा के विस्तार के कारण कथा की ओर मेरी प्रवृत्ति बढ़ गयी … कहानी लेखन आरम्भ करते ही मुझे अनुभव हुआ कि कथा-त्तत्व मेरे उतने ही समीप हैं जितना काव्य ।"[१] जीवन में और सर्जन में, आत्मसंघर्ष की स्थितियाँ कभी अलग-अलग नहीं होतीं । मुक्तिबोध ने इन्हें हमेशा एक माना । वे अपने परिवेश के अन्तर्विरोध के

---

१. तारसप्तक - मुक्तिबोध का वक्तव्य - पृ.४२

खिलाफ संघर्ष कर रहे थे । मुक्तिबोध की कहानियों का रचना-काल लगभग सत्ताईस वर्षों में फैला हुआ है । उनके अब तक प्रकाशित दो कहानी-संग्रह है - 'काठ का सपना' और 'सतह से उठता आदमी' । 'काठ का सपना' संग्रह की अन्तिम रचना 'विपात्र' है, जिसकी कल्पना मुक्तिबोध ने उपन्यास के रूप में की थी । इस लघु उपन्यास के अतिरिक्त मुक्तिबोध का 'एक विखंडित उपन्यास' १९७५ के 'पक्षधर' संकलन-१ में प्रकाशित हुआ है ।

मुक्तिबोध की कुछ अपूर्ण कहानियाँ भी हैं । इनमें से अधिकांश अपूर्ण कहानियाँ पूर्णता का आभास कराती हैं । यहाँ मुझे डॉ.विजयमोहन सिंह के कथन को जोड़ना उचित लगता है - ''प्रभावान्विति की दृष्टि से देखें तो मुक्तिबोध की सारी कहानियाँ अधूरी लगती हैं - उन्हें कहीं भी पहुँचाकर छोड़ दिया जाता है, अचानक और कभी-कभी अटपटे ढंग से, लेकिन मुक्तिबोध इसे सिर्फ जानते ही नहीं, ऐसा जानबूझकर करते हैं । ... उनकी अधिकांश कहानियाँ कहानियाँ न होकर 'आत्मालाप' हैं - व्यक्ति, समाज और मानवीय सम्बन्धों के बारे में सुचिन्तित आत्मालाप, लेखक के मन पर पड़े भारी बोझ की तरह जिन्हें वह जहाँ तहाँ फेंकता गया है ।''[१] शायद इसीलिए मुक्तिबोध की कहानियों में कहानीपन कम दिखलाई पड़ता है । 'नयी कहानी के सारे तत्व - बेकारी, गरीबी, संत्रास, घुटन, कुंठा, मृत्यु, आत्महत्या, ऊब - मुक्तिबोध की कहानियों में भी हैं, किन्तु मुक्तिबोध इनके सहारे कहानी को आगे नहीं बढाते हैं । वे इन तत्वों को जैसे का तैसा, जडित एवं मूर्छित अवस्था में छोड़ देते हैं । निर्मल वर्मा के अनुसार - ''यह अद्भुत बात है कि मुक्तिबोध की कहानियों में सब कुछ स्थिर हैं, सिर्फ बात चलती है । यह चलती हुई बात जिन्दगी की ठहरी हुई बात को समझना चाहती है, उसकी परत-दर-परत खोलती जाती है । किसी एक कहानी में यदि एक परत खुलती है, तो दूसरी कहानी में उसी बात की दूसरी परत जब तक बात पूरी नहीं होगी, कहानी कैसे समाप्त होगी ? इसलिए मुक्तिबोध की कोई कहानी साफ-सुधरी, सम्पूर्ण रचना नहीं बन पाती । वह एक भटकती हुई आत्मा की डायरी है ।

---

१. डॉ.विजय मोहन सिंह - आज की कहानी, पृ.२७

डायरी में हर सत्य अगले पन्ने के सत्य की प्रतीक्षा में अधूरा पड़ा रहता है, अधूरा और प्रतीक्षारत । मुक्तिबोध की कहानियाँ प्रतीक्षा करती हुई कहानियाँ हैं ।''[१]

चेतना का सम्बन्ध व्यक्ति से है, क्योंकि व्यक्ति-मन से ही चेतना का उद्भव होता है । वैयक्तिक चेतना से सामाजिक तथा राजनीतिक चेतना का विकास होता है । समाज अथवा साहित्य के मूल्य दर्शन और आदर्श परिस्थितियों के अनुसार बदलते हैं । आज का साहित्यकार युग-यथार्थ-जीवन का चित्रण अपने साहित्य में करता है । वह अपने भोगे हुए यथार्थ का चित्रण समाज से परे होकर नहीं कर सकता है । वास्तव में बदलता हुआ परिवेश कहानीकार से एक गहरे परिवेशगत लगाव और समाज संम्पृक्त रचना दृष्टि की अपेक्षा रखता है । जब कोई कहानीकार अपने युग के सामाजिक एवं राजनीतिक अन्तर्विरोध के संदर्भ में अपनी कहानियों की सामग्री चुनता है, तब उसकी कहानियाँ सार्थक बन पड़ती हैं । मुक्तिबोध अपने परिवेश से पूरी तरह सम्बद्ध और सम्पृक्त एक ऐसे संवेदनशील कथाकार है जिन्होंने अपने परिवेश की पीड़ा को देखा ही नहीं, बल्कि भोगा भी हैं । इसलिए उनकी कहानियों में अनुभव की उष्मा है । स्पष्टत: मुक्तिबोध की कहानियों में समाज सम्पृक्त यथार्थ दृष्टि हैं । मुक्तिबोध चाहते थे कि कहानी मनुष्य को उसके परिवेशगत यथार्थ सन्दर्भों के साथ उसे पूर्णता में चित्रित करे । अगर 'नयी कहानी' (या कोई भी कहानी) वैसा नहीं करती तो उनके ख्याल से यह उचित नहीं है ।

मुक्तिबोध मध्यवर्ग के लेखक हैं । इसलिए उनकी कहानियाँ मध्यवर्गीय जीवन की गुत्थियों को खोलती हुई, अपने युग और परिवेश की सार्थक पहचान कराती हैं । उनकी कहानियों में ये निम्नमध्यवर्गीय मनुष्यपीड़ा, आक्रोश, घुटन, लाचारी आदि को झेलता हुआ अपने वास्तविक परिवेश के साथ उपस्थित हैं । मुक्तिबोध अपनी कहानियों को 'मध्यवर्ग की सांवली गहराइयों' की कहानियाँ मानते थे ।

मुक्तिबोध अत्यन्त सजग और संवेदनशील साहित्यकार थे । जीवन के हर कोण पर वे अपनी जिम्मेदारी महसूस करते थे और हर परिस्थिति से अपने को ज़ुडा हुआ पाते थे ।

उन्होंने अभिशप्त, निर्वासित जीवन की भोगी पीड़ाओं को ही अपनी कृतियों में एक खास तल्खी के साथ सन्दर्भित करने की कोशिश की, और इसीलिए उनकी रचना साहित्य की हर विधा के लिए चुनौती-सी बन गयी है - चाहे वह कहानी हो, या कविता हो, या डायरी - सभी की सभी एक दूसरी की सीमाओं को कहीं छूती, कहीं साथ-साथ चलती और कहीं एक दूसरे को काटती हुई आगे बढ़ती नज़र आती हैं। श्रीकांत वर्मा ने ठीक ही कहा है - ''कविता में जो काम अधूरा रह गया, उसे उन्होंने डायरी में पूरा करने का प्रयत्न किया। डायरी में जो रह गया उसे शक्ल देने के लिए उन्होंने कहानी का माध्यम चुना। हालाँकि ये तीनों ही विधाएँ मुक्तिबोध के उस महानुभव की संपूर्ण अभिव्यक्ति के लिए जगह-जगह अपर्याप्त साबित हुई हैं, जिसे किसी युग का समग्र अनुभव कहा जा सकता है। मुक्तिबोध अकेले कलाकार हैं जिनमें अनुभव का आवेग अभिव्यक्ति की क्षमता से इतना बड़ा था कि सारा साहित्य टूट गया।''[१]

मुक्तिबोध की कहानियाँ रूढ़ियों तथा असामाजिक तत्वों के बदले नए मानवतावादी मूल्यों की स्थापना करती हुई नए मानव आयामों की तलाश करती है। इसलिए उनकी कहानियों में मानव संवेदना, सहानुभूति, जीवनानुभव, परिवेश की जटिलता आदि सब कुछ हैं साथ ही नये जीवन-मूल्यों का चित्रण तथा सूक्षम यथार्थ-बोध भी है। यह यथार्थ सामाजिक चेतना से सम्पृक्त मानवीय चेतना का यथार्थ है। सामाजिक दबावों की प्रतिक्रियाजन्य चेष्टाओं और व्यक्तित्व रक्षा की प्रक्रियाओं से संयुक्त होकर यह यथार्थ किसी एक व्यक्ति का ही न रहकर सामूहिक और सामाजिक हो जाता है। 'जिन्दगी की कतरन', 'क्लॉड ईथरली', 'मोह और मरण', 'ब्रह्मराक्षस का शिष्य' आदि ऐसी ही यथार्थपरक कहानियाँ हैं।

कहानीकार जिस वातावरण या जीवन परिवेश में जीता है, उसकी लेखनी उस समय की राजनीतिक घटनाओं से अछूती नहीं रह पाती है। हमारे जीवन में किसी भी प्रकार का परिवर्तन राजनीति के माध्यम से भी संभव है। जीवन के व्यवस्थित गठन तथा तत्कालीक

---

१. श्रीकान्त वर्मा - काठ का सपना - भूमिका, पृ.७

सामाजिक समस्याओं एवं प्रश्नों के परिहार के लिए राजनीति ज़रूरी है । मुक्तिबोध का कहना है - ''जनता की राजनीति और जनोन्मुख साहित्य का स्रोत एक है और वह है आज का यथार्थ । ... अतएव राजनीति और साहित्य मात्र अभिव्यक्ति में भिन्न है । उनका मूल है आज का यथार्थ, यानी जन-जीवन का यथार्थ, उसके लक्ष्य, उसके अभिप्रेत, उसके संघर्ष ।''[१]

पूँजीवादी सभ्यता में शासन-तंत्र पर भी पूँजीपतियों का कब्जा होता है । इस व्यवस्था में वही आगे बढ़ सकता है जो पूँजीवादी नीतियों से समझौता कर लेता है । मुक्तिबोध शुरू से ही सामाजिक मूल्यहीनता एवं उसके लिए उत्तरदायी पूँजीवादी सभ्यता के प्रति विशेष जागरूक रहे हैं । मूल्यों की रक्षा का मूख्य भार मध्यवर्ग पर होता है, जब वह वर्ग पूँजीवादी व्यवस्था के चंगुल में आकर अवसरवादिता की ताक में निकल पड़ता है तब मूल्य हीनता बड़े वेग में फैलती है । मुक्तिबोध की कहानियों में पूँजीवादी सभ्यता में अस्मिता के लोप से उत्पन्न स्थितियों का चित्रण है । खोई हुई अस्मिता को प्राप्त करने का माध्यम वर्ग चेतना है । मुक्तिबोध वर्ग-चेतन रचनाकार हैं । पूँजीवादी सभ्यता की भयानक शोषण व्यवस्था को मुक्तिबोध हमेशा के लिए समाप्त करना चाहते थे । मुक्तिबोध की राजनीति दृष्टि शोषितों के साथ है, जनता की पक्षधर है । मुक्तिबोध चाहते हैं कि लेखक शोषितों के साथ होकर उनके अधिकार के संघर्ष में सहयोगी हो और अपनी राजनीतिक दृष्टि तदनुकूल बना ले । मुक्तिबोध की 'समझौता', 'पक्षी और दीमक', 'क्लॉड ईथरली' जैसी कहानियों में पूँजीवादी व्यवस्था से निर्मित असंगतियाँ तथा उससे उत्पन्न भीतरी और बाहरी संकट का चित्रण हुआ है ।

फैंटेसी एक ऐसा शिल्प माध्यम है जिसके द्वारा आज के यथार्थ को, व्यक्ति और समाज की विसंगति को अधिक सफलतापूर्वक चित्रित किया जा सकता है । आज का यथार्थ सीधा और सरल नहीं है, आज मनुष्य टूटते हुए सांस्कृतिक मूल्यों से संत्रस्त है और साथ ही विड़म्बनापूर्ण आधुनिकता का दबाव बढ़ रहा है । मुक्तिबोध की कला की एक

---

१. मुक्तिबोध रचनावली - भाग-६ - पृ.२८२

महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि उन्होंने फैंटसी का प्रयोग यथार्थवादी वस्तुतत्व और क्रान्तिकारी दृष्टिकोण की व्यंजना के लिए किया है । क्योंकि मुक्तिबोध में वर्तमान व्यवस्था के प्रति नैराश्य भावना थी, वे इस व्यवस्था को उखाड़ फेंकना चाहते थे और इसीलिए वे एक क्रान्ति भी चाहते थे । इसी निराशा, आक्रोश एवं वेदना के कारण उनमें एक आवेग था, एक संघर्ष था । मुक्तिबोध का द्वन्द्व एवं संघर्ष फैंटसी-शिल्प के माध्यम से समाधान पाता है ।

भाषा अनुभव के साथ जुड़ी हुई अनिवार्य शर्त है । यह एक सामान्य-सी बात है कि भाषा और अनुभवों का गहरा सम्बन्ध है और हर नये अनुभव के पास भाषा का कोश होता है । मुक्तिबोध की भाषा सर्वथा मौलिक है । उन्होंने कहीं पर भी अपने विचारों एवं भावों को भाषा का अनुचर बनने पर विवश नहीं किया, बल्कि सदैव उन्होंने अपने भावों के अनुरूप भाषा को गढ़ा है और इसीलिए अपनी रचनाओं में अंग्रेज़ी, उर्दू, फारसी और संस्कृत के शब्दों का प्रयोग किया है । वास्तव में अपने विचारों को सबलतम अभिव्यक्ति देने के लिए उनको जिस शब्द की आवश्यकता पड़ी उसको तुरन्त ले लिया । मुक्तिबोध के प्रतीकों की विशेषता यह है कि कहीं पर भी उनमें जटिलता नहीं है । मुक्तिबोध ने बिम्बों के द्वारा अपनी आन्तरिक वेदना को सामाजिक वेदना में मिला कर प्रकट किया है । सचेत और कुशल कहानीकार के हाथों कहानी का शिल्प अथवा रूप विधान उसके कथ्य से एक मेल होकर उसके साथ अपने आप उभरता चलता है, किन्तु यह कोई स्वचालित क्रिया नहीं है, इसके लिए सचेत प्रयास की आवश्यकता होती है । मुक्तिबोध अत्यधिक सचेत होकर यह प्रयास करते दिखाई देते हैं ।

आज की कहानी में विशेष कर मध्यवर्ग और निम्नवर्ग से सम्बन्धित अधिक कहानी लिखी जाती है जो अधिक प्रामाणिक हुआ करती है । चुँकि लेखक स्वयं मध्यवर्ग या निम्नवर्ग का होता है । मुक्तिबोध मध्य-निम्नवर्ग के लेखक हैं । उनकी कहानियों में अपनी सारी खामियों और अच्छाइयों के साथ मात्र सामान्य मनुष्य ही अवतरित हुआ है । मुक्तिबोध की कहानियों का विषय ही मध्यवर्ग का सामाजिक, आर्थिक और पारिवारिक

उत्पीड़न से ग्रस्त अभिशप्त जीवन रहा है । मध्यवर्ग की पीड़ा को, उनके जीवन की वास्तविकताओं को जितना अधिक और जिस गहराई तक मुक्तिबोध ने समझा है तथा उसे ईमानदारी से अभिव्यक्त किया है, शायद ही किसी अन्य लेखक ने इस सीमा तक प्रयास किया हो ।

मुक्तिबोध की कविताओं की अपेक्षा कहानियों की संख्या अत्यन्त कम है । लेकिन कविता के समान ही इनकी सभी कहानियाँ गुणात्मक हैं । इन कहानियों तथा पात्रों के माध्यम से मुक्तिबोध पूरे युग को हमारे सामने ला देते हैं ।

निष्कर्षत: मुक्तिबोध की कहानियों के रचना-विधान की अपनी ख़ासियत है । इन कहानियों को सिर्फ़ एक बार पढ़ लेने पर इनके अर्थ स्पष्ट नहीं हो सकते । उनकी कविताओं की तरह ही इन कहानियों को बार-बार धैर्यपूर्वक एकाग्र मन से पढ़ने की आवश्यकता होती है । तब जाकर इसके अर्थ परत-दर-परत खुल कर हमारे सामने आते हैं । मुझे ऐसा लगता है कि जितनी बार हम उनकी कहानियों को पढ़ते जाते हैं, उतनी ही बार उनके अर्थ एवं भाव हमारे लिए सरल होते जाते हैं । कहानियों में अभिव्यक्त समकालीन सामाजिक यथार्थ की संवेदना, पीड़ा और मुक्तिबोध के दृष्टिकोण को समझने में हम सक्षम हो जाते हैं । सतह से उठता आदमी की भूमिका में शमशेर बहादूरसिंह ने लिखा है-"हर एक कहानी एक ऐसे घाव को, एक ऐसी पीड़ा को हमारे सामने उघाड़ कर रखती है जिसे हम देखकर अनदेखा और सुनकर अनसुना कर जाते रहे हैं । एक बाार इन कहानियों के पढ़ने के बाद पाठक के लिए ऐसा करना असंभव हो जाता है । लगता है जैसे इन कहानियों में अनेक आयामी अर्थ छिपे हों । इन्हें पढ़ने पर हर बार ऐसा कुछ शेष रह जाता है, जो इन्हें फिर-फिर पढ़ने को आमंत्रित करता है ।"[१]

वास्तव में मुक्तिबोध की कहानियाँ कविताओं से ज़्यादा हमारे सोच-विचार के लिए सामग्री उपस्थित करती हैं । उनकी कविताओं की अर्न्तध्वनियों को समझने के लिए उनकी कहानियों की पृष्ठभूमि सहायक होगी, ऐसा मेरा विश्वास है । मुक्तिबोध ने स्वयं

१.शमशेर बहादूर सिंह - सतह से उठता आदमी - भूमिका - पृ.५

इसे स्वीकार करते हुए कहा है - "मैंने सोचा कि मैं हर कविता पर एक कहानी लिखूँ । ..... अगर कविता नहीं तो कविता की आत्मा को, कहानी के रूप में ही क्यों न सही, मान्यता प्रदान करा सकूँगा, यह मेरी अभिलाषा है ।"[१]

स्पष्ट है कि कवि मुक्तिबोध और कहानीकार मुक्तिबोध एक दूसरे के पूरक हैं । मुक्तिबोध की कहानियाँ उनकी कविता की समझ को बढ़ाने में सहायक हैं । मेरा विश्वास है कि उनकी कहानियों के अध्ययन के बिना आधुनिक हिन्दी कहानी साहित्य का अध्ययन अधूरा रह जायेगा ।

* * *

१. मुक्तिबोध रचनावली - भाग - ४, पृ.१५३